

Str. 313, 14. सुते सुस्वापः सुखसुप्तिका ॥ ८८ ॥

Str. 314, 17. आकारगूहने चावकटिकावकुटारिका ।
गृहनालिका

Str. 330, 67. अथ सूत्रधारे स्याद्वीजदर्शकः ॥ ८९ ॥

Str. 336, 92. पूज्ये भट्टारको भट्टः प्रयोज्यो पूज्यनामतः ।

Str. 343, 11. अथ प्रवाणे क्षेत्रज्ञो नदीज्ञो निज्ञ इत्यपि ॥ ९० ॥

Str. 343, 12. हेकालच्चेकिलौ हेके

Str. 349, 34. कोहलो ऽस्फुटभाषिणि ।

Str. 349, 35. मूके त्रडकडौ

Str. 353, 49. मूर्खे तनेडो नामवर्जितः ॥ ९१ ॥

Str. 356, 62. परतन्त्रे वशायत्तावधीनो ऽपि

Str. 358, 68. अथ दुर्गतिः ।

॥ क्षुद्रो दीनश्च दीनश्च

Str. 363, 81. भाटिस्तु गणिकाभृतौ ॥ ९२ ॥

Str. 365, 90. त्रस्तुत्रस्तौ तु चकिते

Str. 380, 36. अथ क्षुद्रप्रखलौ खले ।

Str. 382, 40. चैरे तु चेरडो रात्रिचरः

Str. 388, 60. यात्रा तु भिक्षणा ॥ ९३ ॥

॥ ९३ ॥ अभिषष्टिर्मार्गणा च

Str. 393, 76. बुभुक्षायां क्षुधाक्षुधौ

Str. 396, 89. भक्तमाडे तु प्रस्रावप्रस्रावच्छेदनास्रवाः ॥ ९४ ॥

Str. 398, 95. अपूपे पारिशीलः

Str. 399, 1. अथ कर्मभो दधिसक्तुषु ।

Str. 400, 4. इण्वेरिका तु वटिका शकुली तर्धभोटिका ॥ ९५ ॥